Lecture N. (10)

Name of the college – APSM College, Barauni, Begusarai
(L.N.M.U., Darbhanga)
Name – Dr. Bharti Kumari (APHRC)
Lession / Plan For Class – BA. (H). part-1, paper-1
Date – 13-04-2021

Topic Ashok Ka Mulyankan.

अशोक का मूल्यांकन :— अशोक भारतीय इतिहास में एक महान आदर्श व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था। विश्व के किसी भी इतिहास में ऐसे सम्राट का उदाहरण नहीं मिलता जिसने अक्षरशः अपने आदर्शों का पालन किया हो। वस्तुतः वह भारतीय इतिहास का सर्वाधिक उत्कृष्ट रत्न था। उसका गौरवपूर्ण इतिहास विश्व इतिहास का प्रमुख अध्याय है। वास्तव में वह संसार का सर्वश्रेष्ठ शासक माना जाता है वह विजेता और शासक के अतिरिक्त शान्ति और धर्म का प्रचारक भी था। राजनीतिक दृष्टि से उसका साम्राज्य अत्यंत विस्तृत था। शक्ति और बल के बावजूद भी उसने स्वेच्छा से शान्ति का मार्ग अपनाया और विजय की लालसा का परित्याग कर दिया। मानव इतिहास में इस तरह का यह पहला उदाहरण था। उसने भौतिक साम्राज्य को ठुकरा कर धार्मिक साम्राज्य स्थापित किया, भूमि विजय को छोड़कर हृदय विजय का प्रचार किया। यही कारण है कि कोई भी सम्राट उसके नजदीक तक नहीं पहुँच सकता। उसके शासनकाल में भारत का सर्वांगीण विकास हुआ। सचमुच वह एक महान सम्राट था। सम्राट अशोक की महानता, उच्चता और श्रेष्ठता निम्नलिखित गुणों पर आधारित हैं :—

(1) साम्राज्य निर्माता (2) महान व्यक्तित्ववाला व्यक्ति (3) योग्य सेनानायक (4) महान शासक (5) महान धर्मवेत्ता तथा धर्मप्रचारक (6) एक महान राष्ट्र निर्माता (8) प्रजा का सेवक और उदारता की मूर्ति (9) महान आदर्शवादी।

P.t.o.

(1) सामाज्य निर्माता :— अशोक एक महान साम्राज्य निर्माता था। सिंहासन पर बैठने के पूर्व अशोक उज्जैन का शासक रह चुका था। सम्राट बनने के बाद उसमें भी साम्राज्यवादी शासक बनने की इच्छा प्रबल हुई। "दिव्यावदान" के अनुसार उसने स्वश नगर को पराजित किया।

(2) महान व्यक्तित्ववाला व्यक्ति :— अशोक की महानता का सबसे प्रमुख प्रमाण उसका महान व्यक्तित्व ही कलिंग युद्ध के पूर्व अशोक ने भी आमोद - प्रमोद तथा विलासिता का जीवन व्यतीत करता।

(3) योग्य सेनानायक → प्रारंभ से ही अशोक में एक सेनानायक के सभी गुण विद्यमान थे। कुशल सेनानायक होने के नाते वह युद्ध की भीषणता से कभी घबड़ाता नहीं था। तक्षशिला में विद्रोह का दमन कर कश्मीर तथा कलिंग पर विजय प्राप्त कर उसने अपनी सैनिक कुशलता का परिचय दिया। उसने अपने शासनकाल में भी जब तक्षशिला में विद्रोह हुआ तब उसने उसे शान्ती से दबाया ये सारी बातें उसके सफल एवं योग्य सेनानायक होने के उज्जवल प्रमाण है।

(4) महान शासक → सम्राट् अशोक महान शासक भी था। उसकी गणना विश्व के शासको में होती है। प्रजापालन तथा उसका हित - चिन्तन अशोक ने अपने जीवन का लक्ष्य माना और प्रजा को सन्तानवत मानकर उसी के हित - चिन्तन में व्यस्त रहने लगा।

(5) महान धर्मनेता तथा धर्म - प्रचारक :— सम्राट अशोक का नाम इतिहास में युद्धों द्वारा विजयों की एक गौरवशाली पंक्ति निर्माण करने के लिए उतना प्रसिद्ध नहीं है, जितना की धार्मिक क्षेत्र में धर्म यानी कि विजय धर्म - विजय पताका फहराने के लिए प्रसिद्ध है।

(6) एक महान राष्ट्र निर्माता :— अशोक एक महान राष्ट्र निर्माता भी था उसने राष्ट्र की एकता एवं संगठन के लिए कई कार्य किये। सर्वप्रथम उसने एक राष्ट्रभाषा का प्रयोग किया। इस लक्ष्य की पुष्टि उसके अभिलेखों में

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रयुक्त होती है।

⑦ महान निर्माता :— अशोक एक महान निर्माता भी था। वह भवन-निर्माण और पुल सुसज्जित करवाने में बड़ी अभिरुचि रखता था। अनुश्रुतियों के अनुसार उसने कश्मीर में श्रीनगर और नेपाल में ललिता पट्टन नामक नगरों का निर्माण करवाया था। बराबर पहाड़ियों में आजीविकों के निवास के लिए गुफाओं का निर्माण किया गया था। अशोक के स्तम्भ चुनार के पत्थरों के बने हैं जो नीचे काफी मोटे और ऊपर पतले हैं। इनकी ऊँचाई 40-50 फुट तथा वजन लगभग 50 टन है। शिलाएं-पट्टिका पर जो चित्रकारी है और बिल्कुल ऊपर सिंह, बैल अथवा घोड़े हाथी की आकृतियाँ हैं जो बिल्कुल सजीव दिखते हैं। अशोक के सभी स्तम्भ लेख कलात्मक हैं।

⑧ प्रजा का सेवक और उदारता की मूर्ति :— अशोक दया तथा उदारता की अद्वितीय मूर्ति था। कलिंग युद्ध के बाद उसके जीवन में इतना महान परिवर्तन आया कि वह अहिंसा का परम पुजारी बन गया। उसकी दया तथा उदारता केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं रही बल्कि समस्त प्राणी मात्र संरक्षक बन गया। उसने पशु हत्या को बन्द कर दिया तथा पशुओं की चिकित्सा की व्यवस्था करवायी। कुछ अवसरों पर तो कैदियों को भी मुक्त कर दिया।

⑨ महान आदर्शवादी :— अशोक की महानता उसके उच्च आदर्शों तथा सिद्धान्तों में भी देखी जा सकती है। उसने राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में ऐसे नवीन आदर्शों की स्थापना की जिनकी कल्पना उसके युग के महानतम सम्राट भी नहीं कर सके। राजनीतिक क्षेत्र में उसके आदर्श थे। शान्ति तथा सद्भावना की स्थापना पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध तथा प्रजा के हित की बात हमेशा ध्यान में रखना।

P.T.O

अशोक की गणना विश्व की महानतम विभूतियों में की जाती है। उसकी तुलना प्रायः रोमन सम्राट कान्स्टेन्टाइन तथा ऑरेलियस, मुगल सम्राट, अकबर, खलीफा, उमा तथा ईसाई धर्म के महान प्रचारक सेन्ट पाल से की गई है, परन्तु इनमें से कोई भी व्यक्ति अशोक की समानता नहीं कर सकता क्योंकि उदारता की साक्षात मूर्ति तथा मानवता का सबसे बड़ा पुजारी था।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए इतिहासकार एच. जी. वेल्स ने अशोक के सम्बन्ध में लिखा है — "इतिहास के पृष्ठ सहस्त्रों राजाओं महाराजाओं के नामों में भरे पड़े हैं। उन सब में अशोक का नाम अकेला तारे की भाँति चमकता है। वोल्गा से लेकर जापान तक अभी उसका नाम सम्मानित होता है। चीन, तिब्बत तथा भारत में उसकी महानता की परम्परायें चली आ रही है।"

एच. जी. ग्लिसन लिखते है — "कि मैं बहुधा अशोक की तुलना मार्कस, औरेलियस सेंट पाल, आदि। सम्राट को हानि कोई मनुष्य क्यों न पहुँचाये किन्तु उसका यह मत है कि उसको जहाँ तक हो सके धैर्य के साथ सहन करना चाहिए।"

कुछ इतिहासकार अशोक की उदारता तथा अहिंसा की नीति को मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण बतलाते है। डॉ - राजवली पांडेय लिखते है — "संसार की जैसी रचना है उसमें धर्म संस्कृति कला आदि जीवन की बहुमूल्य कोमल निधियों की रक्षा करने के लिए भी कठोर सैनिक तैयारी। राजनीतिक दाँवपेंच तथा जागरूकता की आवश्यकता होती है। अशोक की नीति से जीवन का कठोर अंग शिथिल पड़ गया। भारत सेना और राजनीति अनाभ्यास से दुर्बल हो गये धर्म - विजय का प्रभाव साधारण जनता पर अच्छा पड़ा।

भारती कुमारी
A.I.E.L.S.C
13-04-2021

Scanned with CamScanner